# सीनियर सेकेंडरी स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा मार्च, 2019 अंक योजना हिन्दी 'ऐच्छिक' कक्षा — XII

कूटबंध— 29/1/1 29/1/2 29/1/3

	T			. \ , \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	10 (0
प्रश्न	प्रश्न पत्र गु	ुच्छ स.		उत्तर संकेत / मूल्य बिंदु	निर्धारित
सं.					अंक
					विभाजन
	29/1/1	29/1	29/1		
	, ,	/2	/3		
		/ -	/ 0		
				खंड – 'क'	
				and a marin	4 1 4 0
1.	1.	1.	1.	अपठित गद्यांश	1+1=2
	क.	क.	क.	कब :—	
	۹/.	۹۷.	۹/.	4/4 .	
				राष्ट्रहित की भावना की अपेक्षा स्वयं का हित चाहना	
				कैसे : —	
				संकुचित विचारधारा रखना	
	ख.	ख.	ख.	(अन्य बिंदु)	2
	Ⴗ.	역.	역.		2
				तात्पर्यः —	
				केवल अपने संप्रदाय व वर्ग के हित के लिए प्रयत्नााील	
				रहना।	
				कैसे : —	
				जातिगत पार्थक्य भावना को दूर करना,	
				<ul> <li>सब जातियों को बराबर महत्त्व देना</li> </ul>	
				च राव जातिया का वरावर महत्त्व दमा	
	]	l			

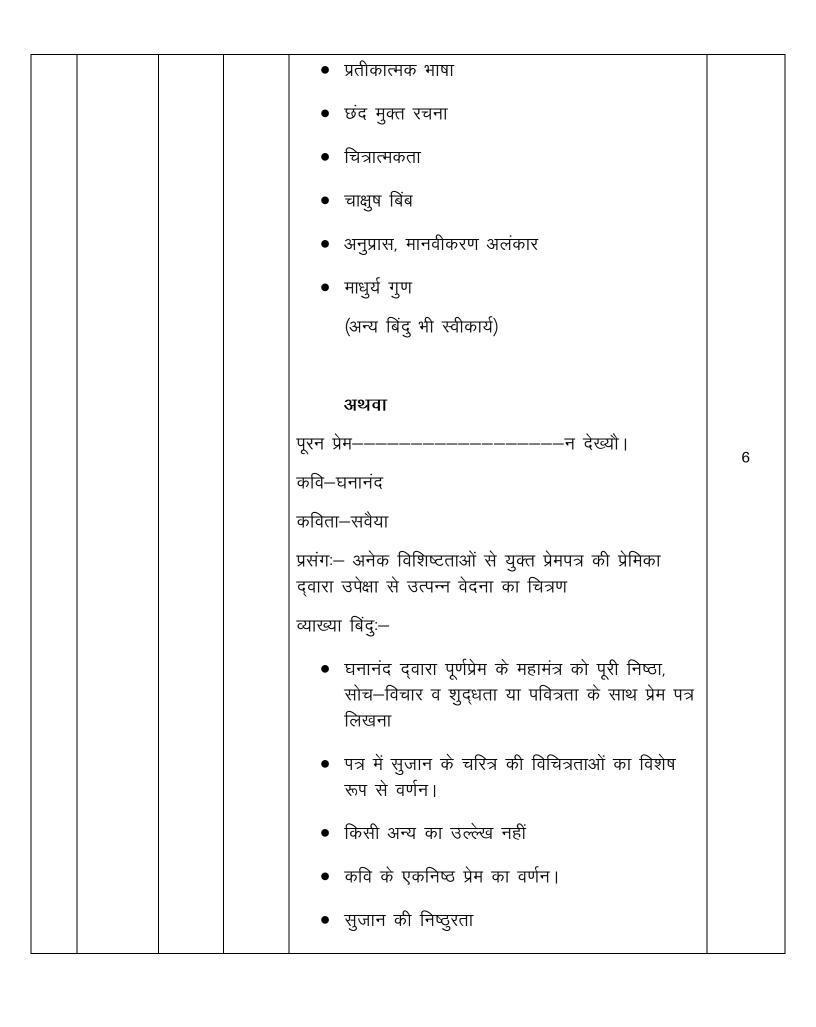
				(अन्य बिंदु)	
	ग	ग	ग	<ul> <li>जाति, संप्रदाय व प्रांतीय इकाइयों द्वारा पारस्परिक प्रेमभाव को महत्त्व देने की अपेक्षा घृणा व द्वेष के बीज बोना।</li> <li>परिणामस्वरूप परस्पर वैमनस्य</li> </ul>	2
	घ	घ	घ	<ul> <li>धर्म, जाति व संप्रदाय के भेदभाव को भूलना</li> <li>राष्ट्रीयता का भाव मन में धारण करना।</li> <li>(अन्य बिंदु)</li> </ul>	2
	ङ	ङ	ङ	<ul><li>वसुदैव कुटुंबकम् की भावना</li><li>अनेकता में एकता</li><li>परस्पर परिवार की भाँति रहना</li></ul>	2
	च	च	च	<ul><li>राष्ट्रहित सर्वोपरि</li><li>वसुदैव कुटुम्बकम्</li></ul>	1
2	2.	2.	2.		1
	क	क	क	<ul> <li>कुंती पुत्र कहलाने की अपेक्षा स्वयं की पहचान को महत्तव देना।</li> </ul>	
	ख.	ख	ख.	<ul> <li>पूर्वजों की पहचान का लाभ लेने की अपेक्षा स्वयं की पहचान बनाना</li> </ul>	1
	ग	ग	ग	• पुरुषार्थ और साहस को	1

	घ	घ	घ	• पुरुषार्थी व साहसी व्यक्ति को	1
	ङ	ङ	ভ	<ul> <li>कौरवों द्वारा आश्रय दिए जाने के कारण कर्ण द्वारा उन्हें बचाने का संकल्प करना</li> </ul>	1
	अथवा	अथवा	अथवा		
	क	क	क	<ul> <li>हरी—भरी धरती, स्वच्छ वातावरण,</li> </ul>	1
				• चमचमाती धूप	
				(अन्य बिंदु)	
	ख	ख	ख	• भौजाई से तुलना	
				<ul> <li>हवा के द्वारा वातावरण में हलचल पैदा करने के कारण।</li> </ul>	1
	ग	ग	ग	• वातावरण में सुगंध फैलना।	1
	घ.	घ.	घ.	<ul> <li>गाँव के स्वच्छंद व मनोरम वातावरण का अवलोकन</li> </ul>	1
				करने से।	
	ङ	ङ	ভ	<ul> <li>काल काग की तरह ठूँठ पर बैठा गुमसुम सोई आँखों देख रहा है दिवावसान को</li> </ul>	1
3	3	3	3	खण्ड 'ख'	
	3			<b>निबंध—लेखन</b> (कोई एक निबंध)	8
				<ul> <li>भूमिका एवं उपसंहार 1+1</li> </ul>	
				• विषय—वस्तु ४	

4	4	4	4	<ul> <li>भाषा एवं प्रस्तुति 1+1</li> <li>पत्र—लेखन</li> <li>आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ 1</li> <li>विषय—वस्तु 3</li> <li>भाषा 1</li> </ul>	5
5	5 क. ख.	_ _	_ _	किन्ही चार के उत्तर अपेक्षित  • गोवा, 1556 ई.	1x4=4 1
	ग.	_	_	<ul><li>स्थायी होना, वि वसनीयता</li><li>मानव की जिज्ञासा भाांत करना</li></ul>	1
	घ	_	_	(अन्य बिंदु भी स्वीकार्य )  • सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और ऑकड़ों की गहरी छान—बीन के आधार पर किसी घटना समस्या या मुद्दे से जुड़े महत्त्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाना।	1
	ङ			<ul> <li>समाचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखना और उसके बाद घटते हुए क्रम के महत्त्व में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को प्रस्तुत करना</li> </ul>	1
		5 क		<ul><li>मानव का आत्मकेंद्रित होना।</li><li>दिखावे की प्रवृत्ति को बढ़ावा।</li></ul>	1
		ख		• तत्कालिकता और नवीनता	1

		• पुष्टि—प्रतिपुष्टि	1
ग		• 1 अप्रैल, 1930	
घ		घटना समस्या या विचार जिन्हें जानने की अधिक से अधिक लोगों में रुचि हो।	1
ভ		(अन्य तर्कसंगत उत्तर भी मान्य)	4
9		• स्त्रोत, भाषा, संदेश, माध्यम, प्राप्तकर्ता फीडबैक, शोर	1
	5 क	<ul> <li>समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें, पोस्टर, पैंपलेट, हैंडबिल आदि</li> </ul>	1
	ख	<ul> <li>टी.वी. की अपेक्षा सस्ता व सुलभ</li> <li>काम करते हुए भी सुनते रहने की सुविधा</li> </ul>	1
	ग	• विलय—1997 ई. में, प्रसार भारती में	1
	घ	<ul> <li>संवाददाता द्वारा प्राप्त विषय—वस्तु की सत्यता को परखना।</li> </ul>	1
		• कमियों का निवारण करना	
		• विषय—वस्तु को छपने योग्य बनाना।	
	ङ	गहराई से छानबीन करके ऐसे तथ्यों और सूचनाओं को सामने लाने की कोि । जिन्हें दबाने या छिपाने को प्रयास किया जाता है	1

6	6	6	6	आलेख – लेखन/फीचर लेखन	3
				विषय – वस्तु व प्रस्तुति 2	9
				भाषा 1	
7	7	7	7	_ एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या :—	6
				<ul><li>संदर्भ और प्रसंग 1</li><li>प्रसंग 1</li><li>व्याख्या 3</li></ul>	
				• विशेष 1	
				किसी अलक्षित सूर्य ——————बिल्कुल बेखबर।	6
				कवि – केदार नाथ सिंह	
				कविता—बनारस	
				प्रसंग :	
				बनारस की प्राचीनता, आध्यात्मिकता के साथ आधुनिकता के सामंजस्य का वर्णन	
				व्याख्या बिंदु :	
				<ul> <li>वाराणसी को श्रद्धा, आस्था, निष्ठा व विश्वास से परिपूर्ण साधक के रूप में चित्रिण।</li> </ul>	
				• समर्पण भाव से सांस्कृतिक वैभव रूपी अर्ध्य।	
				<ul> <li>भाताब्दियों से गंगा के सान्निध्य में परंपरा और संस्कृति के संरक्षण की तपस्या में लीन।</li> </ul>	
				• भैतिकता की अंधी दौड़ से अलग	
				कला पक्ष:—	
				• खड़ी बोली	



			<ul> <li>अज्ञानी की तरह बिना पढ़े, बिना देखे पत्र के</li> <li>टुकड़े—टुकड़े कर देना</li> </ul>	
			विशेष :	
			• सवैया छंद	
			● ब्रज भाषा	
			• वियोग शृंगार रस	
			• माधुर्य गुण	
			• 'पूरन प्रेम, चारु चरित'—अनुप्रास अलंकार	
			● 'घनानंद'—श्लेष अलंकार	
			<ul> <li>संगीतमय, गेय, लयबद्ध भाषा</li> </ul>	
8	8		दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित :-	2+2=4
	क		<ul> <li>स्कंदगुप्त द्वारा प्रणय निवेदन ठुकराए जाने के बाद देवसेना द्वारा अपने यौवन को स्कंदगुप्त के लिए व्यर्थ गँवाना।</li> </ul>	2
			<ul> <li>स्कंदगुप्त के प्रेम के वशीभूत होकर अपने जीवन की अन्य सभी अभिलाषाओं को लुटा देना।</li> </ul>	
	ख		<ul> <li>प्रेम में नायिका को नित्य नवीनता का आभास होने के कारण तृप्ति होना।</li> </ul>	2
			<ul> <li>नायिका द्वारा हमेशा अपने प्रिय की निकटतता की चाह बने रहना।</li> </ul>	
	ग		<ul> <li>आज़ादी के बाए कुछ लोगों का भ्रष्ट आचरण, बेईमानी व शोषण के बल पर मालामाल होना</li> </ul>	2

घ		<ul> <li>निष्ठा व आस्था के साथ समाज के प्रति संवेदनशील व ईमानदार व्यक्ति का अपने अधिकारों से वंचित हो जाना</li> <li>कौशल्या का अर्धविक्षिप्त—सा हो जाना।</li> <li>राम के धनुष—बाण व जूतियों को हृदय व नेत्रों से लगाकर,पुत्र की उपस्थिति का आभास</li> <li>राम के वनगमन का स्मरण आने पर चित्रवत् हो जाना</li> </ul>	2
	8 क	<ul> <li>भाई व पिता की मृत्यु के बाद देवसेना का अकेले पड़ जाना</li> <li>स्कंदगुप्त द्वारा देवसेना के प्रणय—निवेदन को ठुकरा देना</li> <li>प्रेम व जीवन में मिली असफलता का देवसेना की निराशा व वेदना का कारण बनना</li> <li>स्कंदगुप्त के प्रेम के वशीभूत होने के कारण जीवन के अन्य सुखों की उपेक्षा करना</li> </ul>	2
	ख	<ul> <li>प्रकृति के उद्दीपन से विरहावस्था का और बढ़ जाना</li> <li>भवन में अकेले रह पाना असंभव</li> <li>सावन के कारण विरह में वृद्धि</li> <li>पुष्पों से लदे वन,कोयल की कूक भँवरों की गुनगुनाहट द्वारा उद्दीपन</li> </ul>	2

	ग		• भरत को यथोचित स्नेह	
			• उसके अपराध करने पर भी क्रोधित न होना	2
			<ul> <li>खेल में भरत के हार जाने पर मनोबल को बढ़ाने हेतु</li> <li>जिताने का उपक्रम करना</li> </ul>	
			• परस्पर प्रेम, सम्मान व श्रद्धा का भाव	
	घ		<ul> <li>किव का संसार की विषय परिस्थितियों से आहत होना</li> </ul>	2
			• पूँजीपति व्यवस्था द्वारा समाज का शोषण	
			• अपना अस्तित्व बचाने में असमर्थता	
			<ul> <li>रक्षकों का ही भक्षक बन जाना</li> </ul>	
		8		
		क	सांस्कृतिक विशेषताएँ:—	
			• अतिथि देवो भव की परम्परा	
			• लोगों में करुणा एवं दया का भाव	
			• वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव	2
			अन्य संस्कृतियों को अपने में समाहित करने का भाव	
			प्राकृतिक विशेषताएँ:	
			अद्वितीय प्राकृतिक सुंदरता	
			● शस्य–श्यामला धरती	
			• पशु—पक्षियों का कलरव	

		ख	• विवाह अत्यंत सादगी से संपन्न	2
			• विवाहादि उत्सवों में गाए जाने वाले गीतों का अभाव	
			पिता द्वारा अकेले ही सभी वैवाहिक रस्मों का निर्वाह	
			• पुष्पसेज भी पिता द्वारा तैयार करना	
			• पिता द्वारा ही कुल-परंपरा की शिक्षा देना	
		ग	अगहन मास की विशेषताएँ:	
			• शीत ऋतु के प्रकोप की शुरुआत	2
			• दिन छोटे व रात लम्बी होना	
			<ul> <li>ठंड के कारण लोगों का गर्म कपड़ों व रुई से बने वस्त्रों के उपयोग की शुरुआत</li> </ul>	
			विरह व्यथा:	
		•	• नागमति के विरह में वृद्धि	
			• हृदय और शरीर का विरह से कॉंपना।	
			<ul> <li>नागमती का रूप—सौंहर्य क्षीण हो जाना</li> </ul>	
			• पति के विरह में दीपक की बाती की भांति जलना।	
		घ	प्रेम में नायिका को नित्य नवीनता का आभास होने के कारण तृप्ति न होना।	2
			नायिका द्वारा हमेशा अपने प्रिय की निकटता की चाह बने रहना।	
9			काव्यांशों का काव्य—सौंदर्यः— (कोई दो)	3+3=6
			भाव सोंदर्य — 1	

			कला पक्ष — 2	
9	9	9	रकत ढरा —————समेटहुँ पँख।	3
क	क	क	भाव पक्ष:—	
			<ul> <li>प्रियतम के वियोग में नागमती की विरह अवस्था का मार्मिक व दयनीय चित्रण</li> </ul>	
			<ul> <li>मरणासन्न नायिका की अपने प्रियतम से मिलने की चाह का वर्णन</li> </ul>	
			कला पक्ष:—	
			• अवधी भाषा	
			• दोहा छंद	
			• ध्वन्यात्मकता का गुण	
			अतिश्योक्ति व अनुप्रास अलंकार	
ख	ख	ख	ऊँचे तरुवरचली गई	3
			भाव पक्षः—	
			<ul> <li>वसंत ऋतु में प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों से का वर्णन</li> </ul>	
			<ul> <li>मनुष्य का प्रकृति में हो रहे परिवर्तनों से अनजान रहना</li> </ul>	
			कला पक्ष:—	
			• खड़ी बोली	
			• छंद मुक्त रचना	
			• अनुप्रास,पुनरुक्ति प्रकाश व उपमा अलंकार	
			• पियराय व फिरकी—सी जैसे सहज देशज शब्दों का	

			प्रयोग।	
ग	ग	ग	इस पथतेरा तर्पण	3
			भाव पक्ष:—	
			पुत्री के शोक में विह्वल कवि के मार्मिक उद्गार	
			<ul> <li>किव द्वारा अपने समस्त कर्मों का फल दिवंगत पुत्री</li> <li>की तृप्ति के लिए अर्पण (तर्पण) करने की चाह</li> </ul>	
			कला पक्ष:—	
			• संस्कृतनिष्ठ भाषा	
			• खड़ी बोली	
			• शब्द चयन सटीक	
			• अनूठी कल्पना	
			• उपमा अलंकार	
घ	घ	घ	पुलकि शरीरमैं काहा।	
			भाव पक्ष:—	3
			<ul> <li>वन में रामसे मिलने पर भरत की हर्षित मनोदशा का चित्रण</li> </ul>	
			<ul> <li>भाई और गुरुजनों के समक्ष अपनी बात कहने का अवसर मिलने पर भरत का पुलिकत होना।</li> </ul>	
			कला पक्ष:	
			• अवधी भाषा	

				• चौपाई छंद	
				• माधुर्य गुण	
				• रूपक अलंकार	
				• गेय, संगीतमय	
				<ul> <li>नीरज, नयन नेह—इस पंक्ति में उपमा, उत्प्रेक्षा,</li> <li>अनुप्रास अलंकार का अनूठा संगम</li> </ul>	
10	10	10	10	एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या :—	
				• संदर्भ व प्रसंग — 1	5
				• व्याख्या — 3	
				• विशेष — 1	
				सुख और दुखमुक्त है	5
				• संदर्भ– लेखक– हज़ारी प्रसाद द्विवेदी	
				• निबंध – कुटज	
				<ul> <li>प्रसंग — कुटज के माध्यम से सुख—दुख के कारणों</li> <li>का विश्लेषण</li> </ul>	
				व्याख्या बिंदु:	
				• सुख—दुख मानव मन की वैकल्पिक भावना	
				• परवशता एक घृणित कार्य व दीनता का पर्याय	
				<ul> <li>मन को वश में न रखने वाला बाह्य आडम्बरों से युक्त</li> </ul>	
				• कुटज मिथ्याचार से पूर्ण रूप से मुक्त।	

• भोगी होकर भी उसमें वैरागी भाव। विशेष :-• तत्सम शब्दावली • मुहावरों का सजीव प्रयोग • विवेचनात्मकता • लाक्षणिकता अथवा संदर्भ :- लेखिका-ममता कालिया 5 कहानी - दूसरा देवदास प्रसंग :- गंगा के पावन स्नान के प्रति श्रद्धालुओं की आस्था का चित्रण व्याख्या बिंदु :-• एक व्यक्ति के माध्यम से भारतीय जनमानस का चित्रण • व्यक्ति में गंगा के प्रति श्रद्धा व समर्पण भाव • आध्यात्मिक शांति में लीन • स्व को त्यागने का भाव • कलुष भाव का त्याग व निर्मल आनंद की अनुभूति विशेष :-• भाषा में सरलता, सहजता, बोधगम्यता।

				• प्रभावशाली भाषा	
				• चित्रात्मक शैली	
				• तत्सम व तद्भव शब्दावली।	
11	11			किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर :-	3+3=6
	क	_	_	संवदिया की विशेषताएँ :—	3
				• सूक्ष्मदर्शी	
				• भावुक व संवेदनशील	
				• ईमानदार व समझदार	
				<ul> <li>प्राप्त संदेशों को उसी रूप में पहुँचाने वाला</li> </ul>	
				गाँव वालों की अवधारणा :—	
				• निठल्ला, कामचोर व पेटू	
				• औरतों का गुलाम	
				<ul> <li>औरतों की मीठी बातों में आकर बिना मज़दूरी लिए लिए संवाद पहुँचाने वाला</li> </ul>	
	ख			<ul> <li>लेखक के मन में बद्रीनारायण चौधरी से मिलने की इच्छा</li> </ul>	
				<ul> <li>लता—प्रतानों के बीच बिखरे बाल व खंभे पर हाथ रखे एक मूर्ति की झलक देखना</li> </ul>	3
				• कुछ क्षणों में मूर्ति का ओझल होना	

ग	प्रकृति के कारण विस्थापन :	3
	<ul> <li>भूकम्प, अकाल,बाढ़ अतिवृष्टि व भूरखलन आदि के कारण प्रकृतिक विस्थापन</li> </ul>	
	• अल्पकालिक व अस्थायी विस्थापन	
	<ul> <li>सामान्य स्थिति होते ही जनमानस की मूल परिवेश में वापसी</li> </ul>	
	औद्योगीकरण के कारण विस्थापन:—	
	<ul> <li>घर, परिवेश व संस्कृति को सदा के छोड़ने की विवशता</li> </ul>	
	<ul> <li>विस्थापन के पश्चात् मूल स्थान पर पुनः बसना असंभव</li> </ul>	
	• जड़ों से कटकर जीने के लिए अभिशप्त	
घ	• लेखक को भोज पर आमंत्रण	3
	• स्वयं स्वागत हेतु प्रस्तुत रहना	
	अपने हाथों से फल छीलकर खिलाना व शहद की   चाय पिलाना	
	<ul> <li>गुसलखाने के बाहर लेखक के लिए स्वयं तौलिया लेकर प्रतीक्षा में खड़े रहना</li> </ul>	
11		
क	<ul> <li>विश्व की रचना प्रजापित के अलौकिक प्रकाश से संभव</li> </ul>	3
	<ul> <li>नए समाज की सृष्टि किव की रचना के माध्यम से संभव</li> </ul>	

	<ul> <li>प्रजापति जगत निर्माता,तो कवि साहित्य निर्माता</li> </ul>	3
	<ul> <li>किव द्वारा इस संसार से असंतुष्ट होकर नवीन समाज की संकल्पना करना व समाज को नई दिशा प्रदान करना</li> </ul>	
ख	आधुनिक भारत के शरणार्थी :	2+1=3
	<ul> <li>औद्योगिकीकरण के परिणाम स्वरूप विस्थापित लोग—शरणार्थी</li> </ul>	
	क्यों :	
	<ul> <li>आधुनिकीकरण की आँधी में जनमानस का मूल परिवेश, प्राकृतिक उपादान, संस्कृति व आवास—स्थल हमेशा के लिए नष्ट होना</li> </ul>	
	• अपने परिवेश में पुनः लौटना असंभव	
	• जड़ों से दूर बसने की मजबूरी	
		3
ग	• मुक्त उत्तर	
	<ul> <li>किसी भी लघु कथा के तीन संगत कारणों का उल्लेख स्वीकार्य</li> </ul>	
घ	बड़ी बहू के संवाद से हरगोबिन के मन को ठेस	3
	<ul> <li>उसके गाँव छोड़कर जाने से गाँव की इज्जत नष्ट होने का भय</li> </ul>	
	• बड़ी बहू का गाँव से पलायन जैसा	
	<ul> <li>हरगोबिन की भावुकता व संवेदनशीलता का चरमोत्कर्ष पर पहुँचना बड़ी बहुरिया के संवाद को</li> </ul>	

			सुनाने में बाधक	
		11		
		क	• पसोवा जैन तीर्थ स्थल	
			<ul> <li>प्रतिवर्ष लगने वाले मेले में दूर-दूर से जैन तीर्थयात्रियों का आना</li> </ul>	
			<ul> <li>इसी स्थान पर स्थित छोटी पहाड़ी की गुफा में महात्मा बुद्ध का व्यायाम करना</li> </ul>	3
			<ul> <li>निकट स्थित सम्राट अशोक के स्तूप में महात्मा बुद्ध के केश व नख खंडों का रखा जाना</li> </ul>	
			जाने की चाह क्यों :	
			अपने संग्रहालय के लिए पुरातत्व महत्त्व की अनमोल व दुर्लभ वस्तुओं को खोजना व प्राप्त करना	
	_	ख	कठिनाइयाँ—	3
			<ul> <li>जलालगढ़ तक बीस कोस की पैदल यात्रा</li> </ul>	
			<ul> <li>थकावट के कारण अध्रचेतन अवस्था में पहुँच जाने</li> <li>पर स्थान को पहचानने में असमर्थ</li> </ul>	
			कारण:—	
			• पैसे का अभाव (टिकट का किराया न होना)	
			<ul> <li>बड़ी बहुरिया के पास शीघ्र पहुँचने की इच्छा</li> </ul>	
			• भूखे–पेट होने के कारण चकरा कर बेहोश हो जाना	
		ग	<ul> <li>औद्योगिकीकरण के नाम पर लोगों को घर—ज़मीन से उखाड़ कर सदा के लिए निर्वासित करना</li> </ul>	3

				• वृक्षों की अंधाधुंध कटाई	
				<ul> <li>औद्योगिक धुएँ से वातावरण प्रदूषित</li> </ul>	
				<ul> <li>कलकारखानों के अपशिष्ट पदार्थों से धरती व पानी का प्रदूषित होना</li> </ul>	
				• ग्लोबल—वार्मिंग की समस्या	
				• ऋतु चक में बदलाव	
			घ	<ul> <li>दर्पण का कार्य—वस्तु को उसी रूप में प्रकट करना</li> <li>यदि साहित्य समाज का दर्पण होता तो साहित्य</li> </ul>	3
				• याद साहित्य समाज का दपण होता ता साहित्य केवल समाज का प्रतिबिंब मात्र बनकर रह जाता	
				<ul> <li>परंतु लेखक के अनुसार साहित्यकार का कार्य समाज के यथार्थ को सामने लाना ही नहीं अपितु असंतुष्ट होकर नवीन समाज के निर्माण की संकल्पना करना</li> </ul>	
				• वर्तमान से आगे भविष्य के स्वरूप का परिचय देना	
12	12	12	12	एक साहित्यकार का साहित्यिक परिचय :	5
				● संक्षिप्त जीवन परिचय —2	
				<ul><li>• रचनाएँ —1</li></ul>	
				• साहित्यिक एवं भाषागत विशेषताएँ –2	
				सूर्यकांत त्रिपाठी निराला–	
				जीवन परिचय	
				• जन्म बंगाल में	

अथवा
• बिंबात्माकता विधान
• मानवीकरण उपमा, रूपक अलंकारों का प्रयोग
• छायावादी शैली
• संस्कृत निष्ठ शब्दावली
• सरल व प्रवाहपूर्ण भाषा
• मुक्त छंद का विकास
<ul> <li>शुद्ध व परिमार्जित खड़ी बोली का प्रयोग</li> </ul>
काव्यगत विशेषताएँ :
• अनामिका आदि
<ul><li>परिमल, गीतिका</li></ul>
• राम की शक्ति पूजा
• 'समन्वय' व 'मतवाला' पत्र का संपादन कार्य रचनाएँ :
<ul> <li>घर पर ही संस्कृत, बांग्ला व अंग्रेज़ी का अध्ययन</li> </ul>
• 14 वर्ष की आयु में विवाह
• अल्पायु में माँ का देहांत

- दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के मीर मुँशी
   सुजान नाम की दरबारी नर्तकी से प्रेम
- सुजान की बेवफाई से निराश व कवि द्वारा निंबार्क संप्रदाय में दीक्षित होना

### रचनाएँ :-

- सुजान सागर
- प्रेम पत्रिका
- प्रीति प्रवास
- पदावली आदि

# काव्यगत विशेषताएँ :-

- रचनाओं में प्रेम के गंभीर, निर्मल व उदात्त भाव का वर्णन
- ब्रज भाषा
- कवित्त व सवैया छंद
- भाषा में सजीवता व लाक्षणिकता का गुण
- लोकोक्तियों व मुहावरों का प्रयोग
- रूपक, श्लेष, अनुप्रास आदि अलंकारों का सफलतापूर्वक निर्वहण

#### अथवा

# रामविलास शर्मा

जीवन परिचय:-

- उत्तर प्रदेश में जन्म।
   लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए. व पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् अध्यापन कार्य
   हिन्दी साहित्य में एक आलोचक, भाषा विज्ञानी व चिंतक के रूप में प्रसिद्ध
- रचनाएँ :-
  - भारतेंदु और उनका युग
  - निराला की साहित्य साधना
  - भाषा और समाज

# भाषागत विशेषताएँ :-

- भाषा में जीवंतता व सहृदयता
- शुद्ध एवं परिमार्जित खड़ी बोली का प्रयोग
- तत्सम शब्दों का प्राचुर्य
- स्पष्टता, गंभीरता व सहजता-लेखन की विशेषता

### अथवा

# भोष्म साहनी

जीवन परिचय :-

- प्रगतिशील कथाकार
- जन्म रावलपिंडी (पाकिस्तान) में
- लाहौर से अंग्रेज़ी में एम.ए. तथा पंजाब विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि

				• 'एफ्रो एशियाई लेखक संघ' से संबंध रचनाएँ :- झरोखे, कड़ियाँ, तमस, पहला पाठ, शोभायात्रा, वसंती आदि भाषागत विशेषताएँ :-	
				<ul> <li>भाषा में उर्दू तथा पंजाबी शब्दों का प्रयोग</li> <li>छोटे—छोटे वाक्यों के माध्यम से रोचकता उत्पन्न करने में सक्षम</li> <li>भाषा में चित्रात्मक का गुण</li> <li>मोहक भाषा—शैली</li> </ul>	
13	13	13	13	सूरदास की चारित्रिक विशेषताएँ:—	2+2=4

		बनने की प्रेरणा।	
		(अन्य उपयुक्त बिंदु भी स्वीकार्य)	
		अथवा	
		झोंपड़ी में आग किसके द्वारा क्यों?—	
		• आग भैरों के द्वारा लगाई गई	
		<ul> <li>भैरों का समाज में स्वयं को अपमानित महसूस करना व प्रतिशोध लेने की ठान लेना</li> </ul>	
		• भैरों के अहम् को ठेस लगना	
		(अन्य उपयुक्त बिंदु भी स्वीकार्य)	
		सूरदास की मनोदशा:—	
		• मन में अनेक द्वंद्वात्मक प्रश्नों का उद्वेलन	
		• अंधेपन की विवशता का अहसास	
		• निराशा का भाव	
		• जमापूँजी के खोने का दर्द	
		<ul> <li>अभिलाषाओं का झोंपड़ी के साथ जलकर राख हो जाना</li> </ul>	
		<ul> <li>पैसों का लम्बे समय तक जोड़ने और साथ खर्च कर अभिलाषाओं की पूर्ति न करने पर पश्चाताप।</li> </ul>	
14	14	किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर :	4+4=8
	क	कम पानी गिरने के कारण:—	
		<ul> <li>औद्योगिक उन्नित के दुष्परिणाम स्वरूप जल, वायु व भूमि प्रदूषण में उत्तरोत्तर वृद्धि</li> </ul>	

	• उद्योगें से निकलने वाला बेतहाशा अपशिष्ट	
	• वनों की अंधाधुंध कटाई	
	• प्राकृतिक संसाधनों का दोहन	
	वैज्ञानिक उपकरणों का अत्यधिक प्रयोग	
	(किन्हीं चार का उल्लेख)	
		4
ख	<ul> <li>लेखक की अपने रिश्तेदार के यहाँ अपनी उम्र से काफ़ी बड़ी अत्यंत रूपवती स्त्री पर आसक्ति</li> </ul>	
	<ul> <li>नारी को देखकर चाँदनी रात में जूही की मोहक गंध की अनुभूति</li> </ul>	
	<ul> <li>लेखक की रग–रग में प्रकृति का बसा होना</li> </ul>	
	उस नारी में बालक को समस्त प्रकृति के सौंदर्य का आभास होना	
	<ul> <li>नारी के रूप सौंदर्य की अनुभूति सजीव प्रकृति के</li> <li>रूप में करना</li> </ul>	
ग	<ul> <li>रूपिसंह के घर छोड़ने के पश्चात् माही गाँव में भारी बर्फ़बारी से हिमांग के ऊँचे पहाड़ का दरकना</li> </ul>	4
	<ul> <li>भूस्खलन से भूपसिंह के घर, माता—पिता, खेतों का</li> <li>दफ़न हो जाना</li> </ul>	
	<ul> <li>भूपसिंह का त्रासदी को झेलने के लिए अकेला पड़</li> <li>जाना</li> </ul>	
	अपनी दुनिया उजड़ी होने के बाद भी भूपसिंह का सकारात्मक रहना व पलायन की बात न सोचना	

		• पूर्ण मनोयोग से हिमांग पर घर बसाना
		<ul> <li>पत्नी शैला के साथ मिलकर पहाड़ों को समतल कर खेत बनाना</li> </ul>
		<ul> <li>पहाड़ी को काटकर झरने का रुख खेतों की ओर मोड़ना</li> </ul>
		<ul> <li>खेती में सहायक दो बछड़ों को लादकर पहाड़ पर ले जाना</li> </ul>
		<ul> <li>अपने जीवन संघर्ष व मेहनत से अपने जीवन की नई कहानी लिखना</li> </ul>
		(किन्हीं चार का सोदाहरण उल्लेख)
		<ul> <li>शेखर व रूपसिंह का गाँव जाते समय एक दर्द</li> <li>भैंरो गीत सुनना</li> </ul>
		• रूपसिंह का अपनी पुरानी यादों में खो जाना
घ		<ul> <li>कोहरा अर्थात् धुंध रूपिसंह के उन ग्यारह वर्षों के प्रतीक के रूप में जिन्हें उसने अपने गाँव व पिरवार से अलग रह कर मंसूरी में व्यतीत किए</li> </ul>
		• रिश्तों की अहमियत का अनुभव होना
		<ul> <li>कुहासे के कारण पहाड़ों पर दुर्घटनाओं की संभावना</li> </ul>
		• घर छोड़ने की ग्लानि का अनुभव करना
		• स्वार्थपरकता पर पश्चाताप
	14	
	क	भूपसिंह पर टूटे पहाड़ की चर्चा:—
		• पहाड़ टूटना—जीवन में भारी मुसीबतों का आगमन
		• अनुज रूपसिंह के घर छोड़ जाने पर भूपसिंह का

	अकेले पड़ जाना	
	<ul> <li>रूपसिंह के पलायन के बाद माही गाँव में भारी बर्फ़्बारी के परिणामस्वरूप हिमांग के ऊँचे पहाड़ों का दरकना</li> <li>पहाड़ के धँसने से भूपसिंह के घर, माता—पिता व खेतों का पहाड़ी की तलहटी में दफ़न हो जाना</li> </ul>	
ख	फूस की राख————————————————————————————————————	4
	<ul> <li>जमापूँजी ही उसके जीवन की संपूर्ण अभिलाषाओं का आधार</li> </ul>	
	<ul> <li>जमापूँजी से पारिवारिक उत्तरदायित्वों को निभाने की योजना</li> </ul>	
	<ul> <li>बहू आने पर भोजन बनाने की चिंता से मुक्ति की चाह</li> </ul>	
	<ul> <li>पितरों के पिंडदान द्वारा धार्मिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करना</li> </ul>	
	<ul> <li>कुआँ खुदवाकर सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्वाह</li> <li>करना</li> </ul>	
	<ul> <li>कुआँ खुदवाकर सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्वाह</li> <li>का भाव</li> </ul>	
	<ul> <li>राख टटोलने पर, पोटली न मिलने पर सारी अभिलाषाओं का अंत होता नज़र आना</li> </ul>	
ग	गाँव की विशेषता :—	4

	1. प्राकृतिक सौंदर्य :—	
	<ul> <li>विभिन्न प्रकार के फूलों — कोइयाँ, कमल, हरसिंगार, सिंघाड़े का खिलना</li> </ul>	
	• कमलपत्र पर भोजन परोसना	
	• विभिन्न प्रकार की वनस्पति	
	• शस्य–श्यामला धरती	
	<ul> <li>वर्षा ऋतु में बादलों के घिरने, गरजने व बरसने का अनुपम दृश्य</li> </ul>	
	• नदी,तालाबों व खेत–खलिहानों में भरा पानी	
	2. वनस्पतियों का जीवन में उपयोग :—	
	• प्राकृतिक इलाज का प्रचलन	
	• लू व गर्मी से बचने हेतु प्याज का सेवन	
	• आम का पन्ना	
	• बर्रे के फूल से ततैया का डंक झाड़ना	4
	• नीम का सफ़ेद पुष्प चेचक के रोग में कारगर	
	• आँख दुखने पर भरभंडा के फूल के दूध का प्रयोग	
	विशेषताएँ : अच्छी लगने के कारण :—	
	• गाँव में पर्यावरण का संरक्षण	
	• पानी व हवा का प्रदूषण रहित होना	

I	1	1		
			<ul> <li>प्राकृतिक उपचार से अंग्रेज़ी दवाओं के दुष्परिणाम से बचाव</li> </ul>	
			(अन्य उचित बिंदु भी स्वीकार्य)	
	घ		<ul> <li>भारत भूमि में प्रवाहित होने वाली निदयों के प्रित आदर, श्रद्धा, समर्पण व पिवत्रता का भाव न होना</li> </ul>	4
			<ul> <li>परंतु आज की भैतिकवादी संस्कृति व खाऊ—उजाऊ सभ्यता में केवल वर्तमान सुख को महत्त्व देना</li> </ul>	
			<ul> <li>स्वार्थपूर्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनों का तीव्रगति से दोहन पर्यावरण को प्रदूषित करने में उत्तरदायी</li> </ul>	
			<ul> <li>औद्योगिक अपशिष्ट, नगरों—महानगरों के मल—जल का नदियों में मिलना</li> </ul>	
		14	धार्मिक अवसरों पर निदयों में पूजा—सामाग्री व मूर्तियों   का विसर्जन	4
		,   क	रूपसिंह को याद दिलाने के कारण :	·
			• जीवन के उतार—चढ़ाव से न घबराना	
			• हमेशा संघर्षशील रहना	
			• अपने आप को कभी कमज़ोर न समझना	
			<ul> <li>कठिन परिस्थितियों का निडरता व साहस पूव्रक सामना करना</li> </ul>	
			• हमेशा सकारात्मक सोच बनाना	
			• निराशा में त्याग आत्मविश्वास व उत्साह बनाए रखना	
			भूपसिंह पर फिट कैसे :	
			<ul> <li>भूपसिंह द्वारा सब कुछ हो जाने पर भी जीवन में निराशा को स्थान न देना</li> </ul>	
 ı	1	1		

		<ul> <li>चिड़िया की तरह विषम परिस्थितियों का डटकर मुकाबला करना</li> </ul>	
		• मौत से भी न डरना—उत्साही बने रहना	
		<ul> <li>चिड़िया से कमज़ोर होने पर भी आत्मविश्वास बनाए रखते हुए विजय पाने की प्रेरणा लेते हुए भूपसिंह का सबकुछ छीनने वाले गीध वाले पहाड़ पर ही अपना घर बसाना।</li> </ul>	
	ख	सूरदास की चारित्रिक विशेषताएँ :	4
		● कर्मठ	
		• साहसी व धैर्यशील	
		● सहृदय	
		• पुनर्निर्माण में विश्वास रखने वाला	
		• आशावादी व आत्मविश्वासी	
		• सकारात्मकता से युक्त	
		• नारी के प्रति सम्मान भाव	
		• निर्णय लेने में सक्षम	
		• संतोषी प्रवृति	
		(कोई चार उचित बिंदु उदाहरण सहित स्वीकार्य)	
	ग	गरमी व लू से बचने के उपाय :	4
		• प्याज का सेवन	
		• धोती या कमीज़ में प्याज बाँधना	
		• कच्चे आम का पन्ना	
		• आम को भूनकर या पकाकर गुड़ या चीनी मिलाकर	

	शर्बत बनाना	
	<ul> <li>आम के लेप को देह पर लपेटना व नहाना</li> </ul>	
घ	पृथ्वी का वातावरण गर्म क्यों :	4
	वैज्ञानिक उपकरणों का अँधाधुंध प्रयोग	
	<ul> <li>कार्बनडाइऑक्साइड आदि हानिकारक गैसों द्वारा</li> <li>धरती के तापमान में उत्तरोत्तर वृद्धि</li> </ul>	
	<ul> <li>विश्वस्तर पर बढ़ते आण्विक परीक्षण</li> </ul>	
	यूरोप व अमेरिका की भूमिका :	
	<ul> <li>इन विकसित देशों द्वारा कल—कारखानों व अन्य साधनों से बड़ी मात्रा में हानिकारक गैसें का उत्सर्जन</li> </ul>	
	<ul> <li>परिणामस्वरूप पृथ्वी के तापमान का सामान्य से अधिक डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाना</li> </ul>	
	• इन देशों द्वारा लगातार आणविक शक्ति में वृद्धि	
	• रोकथाम हेतु माँग को अनदेखा करना	